❍ 30 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *इस दुनिया को बुधी से भूला ?*

➢➢ *"मेरा तो एक बाबा, दूसरा न कोई" - यह पाठ पक्का किया ?*

➢➢ *समस्याओं के पहाड़ को उडती कला से पार किया ?*

➢➢ *याद की वृत्ति से वायुमंडल को पावरफुल बनाया ?*

————————————————————

✧。°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧。°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ *जैसे ब्रह्मा बाप को चलता-फिरता फरिश्ता, देह भान रहित अनुभव किया। कर्म करते, बातचीत करते, डायरेक्शन देते, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारा, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति कराई, ऐसे फालो फादर करो।* सदा देह-भान से न्यारे रहो, हर एक को न्यारा रूप दिखाई दे, इसको कहा जाता है देह में रहते फरिश्ता स्थिति।

✧。°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं त्रिकालदर्शी आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को त्रिकालदर्शी अनुभव करते हो? संगमयुग पर बाप सभी आत्माओंको त्रिकालदर्शी बनाते हैं। क्योंकि संगमयुग है श्रेष्ठ, ऊंचा। तो जो ऊंचा स्थान होता है वहाँ खड़ा होने से सब कुछ दिखाई देता है। *तो संगमयुग पर खड़े होने से तीनों ही काल दिखाई देते हैं। एक तरफ दु:खधाम का ज्ञान है, दूसरे तरफ सुखधाम का ज्ञान है और वर्तमान काल संगमयुग का भी ज्ञान है। तो त्रिकालदर्शी बन गये ना! तीनों ही काल का ज्ञान इमर्ज है? तीनों ही काल स्मृति में रखो-कल दु:खधाम में थे, आज संगमयुग में हैं और कल सुखधाम में जायेंगे।* जो भी कर्म करो वह त्रिकालदर्शी बनकर के करो तो हर कर्म श्रेष्ठ होगा। व्यर्थ नहीं होगा, समर्थ होगा! समर्थ कर्म का फल समर्थ मिलता है।

〰✧ त्रिकालदर्शी बनने से-यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ, 'ऐसा नहीं वैसा होना चाहिए'.....-यह सब क्वेश्चन-मार्क खत्म हो जाते हैं। नहीं तो बहुत क्वेश्चन उठते हैं। *'क्यों' का क्वेश्चन उठने से व्यर्थ संकल्पों की क्यू लग जाती है और त्रिकालदर्शी बनने से फुलस्टॉप लग जाता है। नथिंग न्यु - तो फुल स्टॉप लग गया ना! फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दी लगाने से बिन्दु रूप सहज याद आ जाता है।* बापदादा सदा कहते हैं कि अमृतवेले सदा तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और जो हो गया, जो हो रहा है, नथिंगन्यु, तो फुलस्टॉप भी बिन्दी। यह तीन बिन्दी का तिलक अर्थात् स्मृति का तिलक। मस्तक स्मति का स्थान है. डसलिए तिलक मस्तक पर ही लगाते हैं। तीन

बिन्दियों का तिलक लगाना अर्थात् स्मृति में रखना। फिर सारा दिन अचल-अडोल रहेंगे। यह 'क्यूं' और 'क्या' ही हलचल है। तो अचल रहने का साधन है- अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। यह भूलो नहीं।

〰✧ जिस समय कोई बात होती है उस समय फुलस्टॉप लगाओ। ऐसे नहीं कि याद था लेकिन उस समय भूल गया। गाड़ी में यदि समय पर ब्रेक न लगे तो फायदा होगा या नुकसान? तो समय पर फुलस्टॉप लगाओ। *नथिंग न्यु-होना था, हो रहा है। और साक्षी होकर के देखकर आगे बढ़ते चलो। तो त्रिकालदर्शी अर्थात् आदि, मध्य, अन्त-तीनों को जान जैसा समय, वैसा अपने को सदा सेफ रख सको। ऐसे नहीं कहो कि - 'यह समस्या बहुत बड़ी थी ना, छोटी होती तो मैं पास हो जाती लेकिन समस्या बहुत बड़ी थी!' कितनी भी बड़ी समस्या हो लेकिन आप तो मास्टर सर्वशक्तिवान हो ना!*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ जैसे स्थूल शरीर के वस्त्र और वस्त्र धारण करने वाला शरीर अलग अनुभव होता है ऐसे *मुझ आत्मा का यह शरीर वस्त्र है,* मैं वस्त्र धारण करने वाली आत्मा हूँ। ऐसा स्पष्ट अनुभव हो। जब चाहे इस देह भान रूपी वस्त्र को धारण करें, *जब चाहे इस वस्त्र से न्यारे अर्थात देहभान से न्यारे स्थिति में स्थित हो जायें।*

〰✧ ऐसा न्यारे-पन का अनुभव होता है? वस्त्र को मैं धारण करता हूँ या वस्त्र मुझे धारण करता है? चैतन्य कौन? मालिक कौन? तो *एक निशानी - 'न्यारे-पन की अनुभूति।' अलग होना नहीं है लेकिन मैं हूँ ही अलग। तीसरी अनुभूति - ऐसी समान आत्मा अर्थात एवररेडी आत्मा* - साकारी दुनिया और साकार शरीर में होते हुए भी बुद्धियोग की शक्ति द्वारा सदा ऐसा अनुभव करेगी कि मैं आत्मा चाहे सूक्ष्मवतन में, चाहे मूल वतन में, वहाँ ही बाप के साथ रहती हूँ।

〰✧ *सेकण्ड में सूक्ष्मवतन वासी, सेकण्ड में मूलवनत वासी, सेकण्ड में साकार वतन वासी हो* कर्मयोगी बन कर्म का पार्ट वजाने वाली हूँ लेकिन अनेक बार अपने को बाप के साथ सूक्ष्मवतन और मूलवतन में रहने का अनुभव करेंगे।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *यह कमजोरी व पुरुषार्थहीन वा ढीला पुरुषार्थ देह-अभिमान की रचना है।* स्व अर्थात् आत्म-अभिमानी। इस स्थिति में वह कमजोरी की बातें आ नहीं सकती। तो *यह देह-अभिमान की रचना का चिन्तन करना यह भी स्व-चिन्तन नही।* स्व-चिन्तन अर्थात् जैसा बाप वैसे मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ। ऐसा स्वचिन्तन वाला शभ चिन्तन कर सकता है। शभ चिन्तन अर्थात ज्ञान रत्नों का मनन

करना।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- जीते जी मरकर, बाप का बन, सच्चा परवाना बनना"*

➳ _ ➳ मै चमकती हुई मणि आत्मा प्रकृति के खुशनुमा यौवन को निहारती हूँ... और एक ऊँची पहाड़ी पर बेठ, बाबा की यादो में खो जाती हूँ... जब अपने भटकन भरे अतीत की तुलना... में अपने मीठे आज को और *अपने खुबसूरत भविष्य को देखती हूँ... तो मीठे बाबा पर दिल जान से मर मिटती हूँ..*.धड़कनो में मीठे बाबा को पुकारती हूँ... और मेरे प्यार का दीवाना बाबा... मुझे प्यार करने, गले लगाने, वरदानों से सजाने, हथेली पर स्वर्ग उपहार लिए सम्मुख खड़ा है...

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को सत्य के प्रकाश में ओजस्वी बनाते हुए बोले :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... सच्चे साथ को पाकर, सत्य ज्ञान से भरपूर होकर देह के आकर्षण से मुक्त हो जाओ... और अशरीरी पन के अभ्यास को बढ़ाकर जीते जी शरीर के भान को छोड़... सच्चे परवाने बन, मीठे बाबा पर फ़िदा हो जाओ... *सच्ची प्रीत के सुख में सदा के लिए खो जाओ.*..."

➳ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को सच्चे मनमीत रूप में पाकर... सच्चे प्रेम

की मीठी यादो में खोकर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा खुद को शरीर समझ... विकारो के दलदल में गर्दन तक धँसी मुझ आत्मा... को जो आपने हाथ पकड़ बाहर निकाला है... *इस सच्चे प्यार पर मै आत्मा दिल से कुर्बान हूँ... और आपकी मीठी यादो की दीवानी हूँ.*.."

❊ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा को सच्ची मुहोब्बत का राज समझाते हुए बोले :-* "मीठे लाडले बच्चे...ईश्वर ही सच्चे प्रेम की अनुभूति करा सकता है... *अपने सत्य स्वरूप के नशे में खोकर ईश्वरीय प्रेम में गहरे डूब जाओ*... और मीठे बाबा के दिल तख्त पर मणि सा सज जाओ... ईश्वरीय यादो में ही स्वर्ग के मीठे सुखो के और शांति प्रेम के भण्डार छुपे है..."

➳ ➳ *मै आत्मा अपने मीठे बाबा की रोम रोम से उपकारी हूँ और कह रही हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा कब सोचा था भला कि झूठ के आकर्षण से मुक्त होकर सच्चे प्यार में यूँ खिलखिलाउंगी... *आपके प्यार की छाया तले यूँ दिव्यता और पवित्रता के रंग में रंगकर.*.. इस कदर प्यारी और खुबसूरत आत्मा हो जाउंगी...

❊ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को नश्वर शरीर से अलगाव करा, आत्मानुभूति में डुबोते हुए बोले :-* "मीठे सिकीलधे बच्चे... देह की मिटटी और देहभान के मटमैले पन से बाहर निकल कर सत्य के प्रकाश को फैलाओ... जीते जी मीठे बाबा पर बलिहार हो जाओ... *बेहद की शमा पर परवाने सा कुर्बान होकर, सच्ची प्रीत की रीत निभाओ.*.."

➳ ➳ *ईश्वर पिता के असीम प्यार को देख... मै आत्मा छलछला आयी पलको से, मीठे बाबा का दिल से धन्यवाद करते हुए बोली :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मुझ आत्मा के उज्ज्वल भविष्य के खातिर कितने खप रहे हो... *ज्ञान रत्नों से मुझे सजाकर अशरीरी पन के नशे में भिगो रहे हो.*.. मै आत्मा अपने प्यारे बाबा पर हर साँस और संकल्प से कुर्बान हूँ..." दिल से यूँ मीठे बाबा का शुक्रिया कर... मै आत्मा, अपने कार्य जगत में आ गयी....

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- मेरा तो एक बाबा, दूसरा ना कोई यह पाठ पक्का करना है*"

➳ _ ➳ जिस मौलाई मस्ती का वर्णन पीरों - फकीरों ने किया, वो मौलाई मस्ती क्या है! उसका आनन्द कैसा है! उसका अनुभव मैं आत्मा जब चाहे तभी कर लेती हूँ। *तो कितना श्रेष्ठ सौभाग्य है मेरा कि उन फकीरों ने तो सिर्फ उस मस्ती का वर्णन किया लेकिन मैंने तो उसे जब चाहा तब अनुभव किया। कितना सुख समाया है बाबा की याद में। दिल को कितना सुकून, कितना आराम देती है मेरे मीठे बाबा की मीठी यादें*। मन ही मन अपने श्रेष्ठ भाग्य का गुणगान करती, उस मौलाई मस्ती का अनुभव करने के लिए मैं आत्मिक समृति में टिक कर, अपने सुख, शांत और आनन्दमय स्वरूप में स्थित हो जाती हूँ और अपने मन बुद्धि को सभी बातों से हटाकर सम्पूर्ण एकाग्रचित अवस्था में बैठ जाती हूँ।

➳ _ ➳ अपने सम्पूर्ण ध्यान को मैं केवल अपने निराकारी चमकते हुए ज्योति बिंदु स्वरूप पर और अपने प्यारे पिता के अनन्त प्रकाशमय निराकारी बिंदु स्वरूप पर पूरी तरह एकाग्र कर लेती हूँ। *अपने ही समान अपने पिता के स्वरूप को देख कर मन को जैसे एक सुकून मिल रहा है और बुद्धि सभी बातों से हटकर केवल अपने पिता के उस अति सुंदर स्वरूप को आंखों के सामने चित्रित कर रही हैं*। मेरे प्यारे पिता का स्वरूप मेरी आँखों के सामने ऐसे स्पष्ट हो रहा है जैसे वो मेरी आँखों में ही समाये हुए हैं। उनसे आ रहे परमात्म शक्तियों के करेंट को मैं अपने अंदर प्रवाहित होते हुए स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ।

➳ _ ➳ जैसे मोबाइल को चार्जर से जोड़ते ही उसकी बैटरी चार्ज होने लगती है ऐसे ही मन बुद्धि से सर्वशक्तिवान अपने पिता के साथ कनेक्ट होकर, मैं भी स्वयं को परमात्म शक्तियों से चार्ज होता हुआ अनुभव कर रही हूँ। *मुझ आत्मा की सोई हुई शक्तियाँ परमात्म बल पा कर जागत हो रही हैं और मैं

स्वयं को सर्व शक्तियों से भरपूर होता हुआ महसूस कर रही हूँ। सर्वगुणों और सर्वशक्तियों के सागर मेरे पिता के अनन्त प्रकाशमय स्वरूप से निकल रही सर्व गुणों और सर्व शक्तियों की किरणें मुझ आत्मा को जैसे - जैसे गहराई तक छू रही है एक रूहानी सुरूर मुझ आत्मा के ऊपर छाने लगा है*। एक अद्भुत रूहानी नशे से मैं आत्मा स्वयं को भरपूर अनुभव करने लगी हूँ।

➳ _ ➳ चित को चैन और मन को आराम देने वाली रूहानी मस्ती में डूबी, *मौलाई बन अपने मौला अर्थात अपने मालिक से मिलने उनकी निराकारी दुनिया में चलने का मैं जैसे ही संकल्प करती हूँ मैं महसूस करती हूँ जैसे मेरे शिव पिता परमात्मा से निकल रही अनन्त शक्तियों की शक्तिशाली किरणे मैगनेट की तरह मुझ आत्मा को अपनी तरफ खींच रही हैं और मैं आत्मा परमात्म शक्तियों के चुम्बकीय आकर्षण से आकर्षित हो कर अब नश्वर देह का त्याग कर ऊपर की और उड़ने लगी हूँ*। देह और देह की दुनिया के हर बन्धन से मुक्त होकर मैं स्वयं को बहुत ही हल्का अनुभव कर रही हूँ। तीव्र गति से उड़ते हुए मैं सेकेण्ड में आकाश को पार करती हूँ और अब आकाश से भी ऊपर, सूक्ष्म लोक को पार करके मैं पहुंच गई हूँ अपने शिव पिता परमात्मा की अनन्त शक्तियों की किरणों के बिल्कुल नीचे उनके परमधाम घर मे।

➳ _ ➳ अपने इस परमधाम घर मे अब मैं अपने शिव पिता परमात्मा के बिल्कुल समीप हूँ और उनसे आ रही शक्तिशाली किरणों को स्वयं में समा कर असीम ऊर्जावान बन रही हूँ। *अपने प्यारे शिव बाबा के सर्वगुणों, सर्वशक्तियों और सर्व खजानों को मैं अपने अंदर भरती जा रही हूँ। मौलाई बन उनके प्यार की मस्ती में डूब कर, स्नेह के सागर अपने प्यारे पिता के स्नेह की शीतल धाराओं में मैं बहती ही जा रही हूँ और उस स्नेह में डूबकर गहन अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर रही हूँ*। एक दिव्य अलौकिक आनन्द और अथाह सुख की मैं अनुभूति कर रही हूँ। अपनी बीज रूप स्थिति में स्थित होकर बीज रूप अपने पिता परमात्मा से बेहद का असीम मौलाई सुख पाकर अब मैं आत्मा वापिस अपने कर्म क्षेत्र पर लौट आती हूँ और *अपने साकार तन का आधार लेकर मैं फिर से इस सृष्टि पर कर्म करने के लिए तैयार हो जाती हूँ*।

➳ ➳ *अपनी साकारी देह में भकटि के अकालतख्त पर अब मैं

विराजमान हूँ और शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी कर रही हूँ किन्तु हर कर्म अब मैं मौलाई बन बाबा की याद में रहकर कर रही हूँ इसलिए अब कर्म का अच्छा या बुरा कोई भी फल मुझे अपनी और नही खींचता बल्कि बाबा की याद की मौलाई मस्ती, कर्म के फल से मुझे धीरे - धीरे मुक्त कर कर्मातीत बनाती जा रही है*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं समस्याओं के पहाड़ को उड़ती कला से पार करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं तीव्र पुरुषार्थी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा याद की वृत्ति से वायुमण्डल को पावरफुल बनाती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव मन्सा सेवा करती हूँ ।*
✺ *मैं निष्काम सेवाधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)

(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सेवा के साधन भी भल अपनाओ। नये-नये प्लैन भी भले बनाओ। लेकिन किनारों में रस्सी बांधकर छोड़ नहीं देना। *प्रवृत्ति में आते 'कमल' बनना भूल न जाना। वापिस जाने की तैयारी नहीं भूल जाना। सदा अपनी अन्तिम स्थिति का वाहन - न्यारे और प्यारे बनने का श्रेष्ठ साधन - सेवा के साधनों में भूल नहीं जाना।* खूब सेवा करो लेकिन न्यारेपन की खूबी को नहीं छोड़ना। अभी इसी अभ्यास की आवश्यकता है। या तो बिल्कुल न्यारे हो जाते या तो बिल्कुल प्यारे हो जाते। *इसलिए 'न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स' रखो। सेवा करो लेकिन 'मेरेपन' से न्यारे होकर करो।* समझा क्या करना है? अब नई-नई रस्सियाँ भी तैयार कर रहे हैं। पुरानी रस्सियाँ टूट रही हैं। समझते भी नई रस्सियाँ बाँध रहे हैं क्योंकि चमकीली रस्सियाँ हैं। तो इस वर्ष क्या करना है? बापदादा साक्षी होकर के बच्चों का खेल देखते हैं। रस्सियों के बंधने की रेस में एक दो से बहुत आगे जा रहे हैं। इसलिए सदा विस्तार में जाते सार रूप में रहो।

✺ *"ड्रिल :- सेवा करते मेरेपन से न्यारे होकर रहना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा प्रकृति के मनमोहक छटाओं के बीच एक बहुत ही सुंदर सरोवर के किनारे स्वयं को देख रही हूँ... बहुत शांत वातावरण है और सरोवर का जल भी बिलकुल शांत है... सरोवर में खिले हुए कमल के पुष्प सरोवर की शोभा बढ़ा रहे है... *उन कमल पुष्पों को देखते हुए मैं विचारों में खो जाती हूँ... ये कमल के पुष्प सरोवर में होते हुए भी कितने न्यारे और प्यारे हैं...*

➳ _ ➳ अब मैं पद्मापद्म भाग्यशाली आत्मा स्वयं को देखती हूँ जिसे स्वयं परमात्मा पिता ने अपना बच्चा बनाया और मुझे मेरी पहचान बतायी... *विश्व कल्याणकारी परमात्मा पिता ने मुझे विश्व कल्याण के निमित्त, नयी दुनिया के स्थापना हेतु मुझे अपना सहयोगी विश्व सेवाधारी बनाया है...* साथ ही अपने श्रेष्ठ भाग्य की रेखा खींचने की कलम मेरे हाथों में दे दी है...

➳ _ ➳ इन्ही विचारों में खोई मैं आत्मा सरोवर के तट पर टहलती जा रही थी कि तभी सामने से बापदादा को अपनी ओर आते हुए देखती हूँ... बाबा की दिव्य मुस्कान और उनके प्यार में खोई हुई मैं आत्मा मंत्रमुग्ध सी बापदादा की ओर बढ़ने लगती हूँ... *बाबा मेरे करीब आते ही मेरे सिर पर हाथ रख मुझे प्यार भरी दृष्टि से निहाल कर रहे हैं... मैं आत्मा प्यार के सागर में गहरे डूबती जा रही हूँ...*

➳ _ ➳ अब बाबा भी सरोवर के तट पर मेरे साथ टहलने लगते हैं... सरोवर में खिले हुए कमल की ओर इशारा करते हुए बाबा मुझसे कहते हैं- बच्चे तुम्हे इन कमल के फूलों की तरह ही बनना है... *भल प्रवृति में रहना है लेकिन इन कमल पुष्प के समान स्वयं को न्यारे और प्यारे रखते हुए विश्व सेवा करते मेरेपन के भाव से, सेवा के लगाव से न्यारे और प्यारे बनो...* क्योंकि सेवा का लगाव भी सोने की जंजीर है... यह बेहद से हद में ले आता है...

➳ _ ➳ इसीलिए देह की स्मृति से, ईश्वरीय सम्बन्ध से, सेवा के साधनों के लगाव से न्यारे और बाप के प्यारे बनो तो सदा सफलता मिलती रहेगी... मैं आत्मा बाबा के प्यार में मंत्रमुग्ध सी बाबा की बातों को सुनती जा रही हूँ... बाबा की सारी बातें मेरे अंतर्मन में गहरे उतरती जा रही है... *मैं आत्मा स्वयं को अंदर से बहुत ही शक्तिशाली महसूस करते हुए बाबा की बहुत ही न्यारी और प्यारी विश्व सेवाधारी के रूप में देख रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔